International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 07-08-2023, Accepted: 22-08-2023, Published: 09-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 10-11

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारः एक आलोचनात्मक अध्ययन

सरिता
स्नातकोत्तर, वाणिज्य विभाग, यू.जी.सी नेट, इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

सारांश
अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय में मानव जाति का अध्ययन है, इसमें व्यक्तिगत व सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की जांच की जाती है जिसका भौतिक सुख के साधनों की प्राप्ति और उसके उपभोग से घनिश्ठ संबंध है। इस प्रकार अर्थशास्त्र मानव की उन दैनिक क्रियाओं के अध्ययन से संबंधित है जिसका प्रत्यक्ष संबंध जीविकोपार्जन से है। ये क्रियाएँ अनेक प्रकार की हैं जिनका संबंध सामान्य रूप से राष्ट्रीय उत्पाद के उपभोग, उत्पादन, विनिमय एवं वितरण की समस्याओं से है जैसा कि नाम से ही प्रकट है– अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं की आर्थिक क्रियाओं में रूचि रखने वाले राश्ट्रों के मध्य आर्थिक संबंधों के अध्ययन से संबंधित है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को स्वतंत्र या प्रभुतासम्पन्न राज्य या देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय के रूप में परिभाशित किया जा सकता है। ज्ञान की एक अलग भाखा के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र को अनेक कार्य सम्पन्न करने होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का कार्य विशेशकर अल्पविकसित देशों की समस्याओं के संदर्भ में बड़ी समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं का अध्ययन भी है। फलतः गाट (GATT), अंकटाड़ (UNCTAD) का अध्ययन अल्पविकसित देशों के व्यापार तथा विकास की समस्याओं के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण समझा जा सकता है।

मूल शब्दः अर्थशास्त्र, जीविकोपार्जन, प्रभुतासम्पन्न, विनिमय, अल्पविकसित, समकालीन

अन्तर्राष्ट्रीय **व्यापार के पक्ष में तर्क**
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के अनेक आर्थिक एवं गैर–आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं। चूंकि आर्थिक तथा गैर–आर्थिक के बीच विभाजन रेखा खींचना सरल कार्य नहीं है। अतः उनका सम्मिलित अध्ययन संक्षेप में निम्नलिखित है।

विष्टीकरण एंव श्रम विभाजनः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से लाभ का उदय इस कारण से होता है कि एक देश उन वस्तुओं के उत्पादन में विष्टीकरण करके, जिनके उत्पादन के लिए उसके पास प्राकृतिक साधन, श्रम और पूंजी की बहुलता है, लाभान्वित होता है। स्मिथ ने अत्यंत सारगर्भित भाब्दों में इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण राश्ट्र के कल्याण और समृद्धि में विस्तृत श्रम विभाजन और उत्पादन में विशिश्टीकरण के कारण वृद्धि होती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण की परिधि में विस्तार करके समस्त विश्व में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों को घटाता है फलत उपभोग और मांग में वृद्धि होती है जिसके कारण पुनः विशिश्टीकरण और तकनीकी प्रगति में वृद्धि होती है।

एकाधिकारात्मक प्रवृत्ति पर रोकः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार स्वतंत्र प्रतियोगिता को जन्म देकर उपभोक्ता की एकाधिकारात्मक भोशण से रक्षा करता हैं क्योंकि उत्पादन अत्यंत कुशलतम ढंग से होता है और वस्तु का मूल्य औसत लागत से अधिक नहीं होता है।

अविभेदात्मक प्रकृतिः अविभेदात्मक प्रकृति होने के कारण स्वतंत्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कच्चे माल की उपलब्धि के लिए समस्त देशों को समान अवसर प्रदान की गारंटी देता है तथा सब देशों के लिए विश्व बाज़ार उपलब्ध होता है। स्वतंत्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणाली के अंतर्गत आव यक कच्चे माल के स्त्रोत पर कुछ ही देशों का एकाधिकार नहीं होता।

समस्त देशों के हितों की रक्षाः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार समस्त देशों के हितों की रक्षा करता है। युद्ध एंव युद्धोत्तर काल में कच्चे माल की समस्या इतनी जटिल हो गई थी कि जर्मनी, जापान एवं इटली के लिए कच्चा माल प्राप्त करना लगभग असंभव हो गया था क्योंकि कच्चे माल की पूर्ति करने वाले अधिकांशतः ब्रिटेन और फ्रांस के उपनिवेश थे। फलतः इन देशों ने राष्ट्र संघ एवं अन्य वाले उपनिवेशों के पुनर्वितरण के लिए बड़ा भाोर मचाया।

अन्तर्राष्ट्रीय **सहयोग को बढ़ावाः** अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मुद्राओं की स्वतंत्र बहुपक्षीय परिवर्तनशीलता के साथ अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली को कार्य करने की अनुमति प्रदान करता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग एवं विश्व बंधुत्व की आवश्यक भार्त है। पारस्परिक सहयोग से युद्ध के खतरे टल जाते हैं।

श्रम एवं पूंजी में गुणात्मक परिवर्तनः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से प्राप्त अब तक जिन लाभों की चर्चा की गई है उनसे कही अधिक महत्वपूर्ण लाभ श्रम एवं पूंजी में गुणात्मक परिवर्तन से संबंधित है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के दूरगामी अप्रत्यक्ष प्रभावों का ठीक–ठीक अनुभव तब हो पाता जब तक हम यह जान पाते हैं कि वि व जनशक्ति एवं पूंजी की स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के अभाव में वर्तमान से कितनी भिन्न होती है। तकनीकी ज्ञान विशेशकर विशिष्टीकरण का परिणाम है जो व्यापार के कारण संभव हो सकता हैं।
इतना होते हुए भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विपक्ष में अनेक तर्क दिए जाते हैं। जिनका विवरण आगे प्रस्तुत किया गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय **व्यापार के विपक्ष में तर्कः**
यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार उच्च जीवन–स्तर के लिए वरदान हैं। किन्तु पूर्ति तथा घरेलू उत्पादन के विकास के लिए विदेशी बाज़ार पर निर्भरता निहित है। कुछ लोग इस प्रकार की निर्भरता को खतरनाक बताते हैं तथा तर्क प्रस्तुत करते हैं कि इस निर्भरता को या तो कम किया जाए या बिल्कुल ही समाप्त कर

दिया जाए। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा विशिष्टीकरण के विरूद्ध सबसे जबरदस्त तर्क राष्ट्रवाद का है।

राश्ट्रीय सुरक्षाः कुछ लोग तर्क प्रस्तुत करते हैं कि जो देश युद्ध से संबंधित सामग्री की पूर्ति के लिए विदेशी स्त्रोतों पर निर्भर करता है। उसकी स्थिति युद्धकाल में बड़ी चिन्ताजनक होती है। इस तर्क के समर्थन में दो विश्व–युद्धों के समय ब्रिटेन की स्थिति के अनुभव को प्रस्तुत किया जाता है। वास्तव में स्वतंत्र व्यापार के विरूद्ध यह राजनैतिक या सैन्य संबंधी तर्क है। स्वतंत्र व्यापार के कट्टर समर्थक एड़म स्मिथ ने भी राष्ट्रीय सुरक्षा को सम्पन्नता से अधिक महत्वपूर्ण माना था।

अस्थिरता और आर्थिक नियोजनः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आर्थिक अस्थिरता को जन्म देता है। इस तर्क को 'तीसा' में बल मिला जबकि मंदी एक देश से दूसरे देश को फैलती गई और वस्तुओं, सेवाओं तथा पूंजी के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाह को भंग कर दिया गया। अधिकांश लोग, जो आर्थिक नियोजन में वि वास करते हैं, इस धारणा के समर्थक हैं कि नियोजित आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से स्वतंत्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हानिकारक है।

सरंक्षणवादः परम्परागत रूप से, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विपक्ष में जो भी तर्क दिए गए हैं वे आयातों के विरोध में ही हैं। सरंक्षण के पक्ष में अब तक दिए गए तर्को के अतिरिक्त अन्य तर्क भी प्रस्तुत किए गए हैं जो विदेशी प्रतियोगिता से घरेलू उद्योग की रक्षा करने हेतु दिए गए तर्कों के औचित्य पर प्रकाश डालते हैं। वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विपक्ष में दिए गए तर्कों में महत्वपूर्ण तर्क राष्ट्रीय सुरक्षा, पूर्ण रोजगार, आर्थिक नियोजन आदि का है। इनके अतिरिक्त 'राष्ट्रवाद' आदि के कुछ कम महत्वपूर्ण तर्क भी दिए जाते हैं। ये सभी तर्क सामान्य व्यक्ति के दृश्टिकोण से बड़े प्रभावशाली जान पड़ते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण और व्यापार के उत्कृष्ट लाभ सरंक्षण के तथाकथित लाभों को निश्क्रिय और महत्वहीन बना देते हैं।

निश्कर्श

वर्तमान समय में भी विश्व की अल्प–विकसित अर्थव्यवस्थाओं की उनके नियोजित आर्थिक विकास में विकसित देशों तथा अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जैसे विश्व–बैंक अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम आदि से भारी मात्रा में पूंजी के माध्यम से सहायता की जा रही है। फलतः इस प्रकार की साधन गति ाीलता को अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख अवयव के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का अध्ययन हमें इस बात की चेतावनी देता है कि विश्व के राष्ट्र दीर्घकाल तक द्वन्द्वात्मक आर्थिक नीति को न तो अपना सकते हैं और न व्यवहार में प्रयोग कर सकते हैं। इसके उपरांत अन्तर्राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का अध्ययन हमें इस योग्य बनाता हैं ताकि हम विभिन्न राष्ट्रों की मौद्रिक प्रणालियों की कार्यविधि को जाने तथा समझ सकें।

संदर्भ सूची

1. Delbert A Snider. Introduction to International Economics, 6th Edition, 1976, 1.
2. CP Kindleberger. International Economics, 1973, 1.
3. Gerald M Meier. International Trade and Development, 1963, 193-202.
4. Gunnar Myrdal An International Economics, 1956.
5. C.P Kindleberger, International Economics 5th Edition,1973:5:53-55.
6. Bertil Ohlin, International and International Trade, 1933, 123-126.